Chapter 11

bihar baord 8th history notes कला क्षेत्र में परिवर्तन

कला क्षेत्र में परिवर्तन

पाठ का सारांश-प्राचीन एवं मध्यकाल में भारतीयों ने चित्रकला, स्थापत्य, नृत्य, संगीत, साहित्य के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की थीं । अठारहवीं सदी में राजाओं और नवाबों की डांवाडोल वित्तीय स्थिति के कारण कलाकार एवं साहित्यकार राजकीय संरक्षण से वंचित हो गए थे। पलासी की लड़ाई के बाद उभरी औपनिवेशिक शक्ति की सत्ता के दौरान भारतीय एवं यूरोपीय शैली एक-दूसरे के पास आई।
औपनिवेशिक कला:- कई यूरोपीय कलाकार भी अंग्रेज व्यापारियों एवं अधिकारियों के साथ भारत आए। इन्होंने भारत में नई शैलियाँ, विषयों, परम्पराओं एवं तकनीकी की शुरुआत की। ये यथार्थवादी दृष्टिकोण वाले थे। जो कुछ जैसा दिखता है, वे उसे वैसा ही चित्रित करते थे। ये कलाकार तैलचित्र की नई तकनीक को भारत में आए।
भारत के भूदृश्यों का चित्रण:- यूरोपीय कलाकारों ने पूर्व के भारत की आदिम, गरीब व पतनोन्मुख अवस्था की तस्वीर बनाई। जबकि यूरोपीय सरकार के भारत में कार्य-निर्माण को प्रमुखता से प्रस्तुत कर यूरोपीय सरकार को महिमामंडित करने का प्रयास किया। इनकी लोकप्रिय
शैली 'रूपचित्रण' थी। पहले राजे-नवाब किरमिच पर छोटे चित्रों में अपने वैभव का प्रदर्शन करते थे। किन्तु औपनिवेशिक कलाकार आदमकद छवि बनाने लगे।

ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण:- ऐतिहासिक चित्रकला की एक अन्य शैली 'इतिहास की चित्रकारी' थी। अंग्रेजी चित्रकारों ने अंग्रेजों की युद्धों में जीत को अपनी कला का विषय-वस्तु बनाया।
दरबारी कला और स्थानीय कलाकार:- स्थानीय भारतीय कलाकारों ने भित्ति चित्र एवं परिपेक्ष्य विधि अपनाकर साम्राज्यवादी कला शैली को चुनौती दी। उन्होंने 'कंपनी' यानी अंग्रेजी अधिकारियों के लिए भी चित्र बनाए । इस काल में स्थानीय कलाकारों द्वारा बनाए गए पौधों, जानवरों, ऐतिहासिक इमारतों, पर्व-त्योहारों, व्यवसायों, जाति और समुदाय की तस्वीरों को कम्पनी चित्र' के नाम से जाना जाता है। अंग्रेजों ने भारतीय परिवेश को समझने के लिए ये चित्र बनवाए । राजदरबार के प्रभाव से मुक्त रहते हुए बिहार में कलाकारों ने 'मधुबनी पेंटिग' की प्रमुख चित्रशैली को विकसित और प्रसिद्ध किया।
राष्ट्रवादी चित्रकला शैली:- राजा रवि वर्मा जैसे चित्रकारों ने उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक एवं बीसवीं सदी के प्रारंभ में राष्ट्रवादी कला शैली, विकसित कर जनसाधारण को राष्ट्रवादी संदेश देने का महत्वपूर्ण काम किया। उन्होंने तैल चित्रकारी की यूरोपीय कला शैली को अपनी चित्रकारी का आधार बनाया। उन्होंने रामायण, महाभारत और पौराणिक कहानियों के नाटकीय दृश्यों को किरमिच पर चित्रांकित किया। कला प्रेमियों के बीच उनके बनाए चित्र अत्यंत लोकप्रिय हुए।
कलाकारों का आधुनिक स्कूल:- कलकत्ता, बम्बई, मद्रास और लाहौर में कला स्कूलों (आर्ट स्कूल) की स्थापना, अंग्रेजी सरकार ने उन्नीसवीं सदी के मध्य में की। इससे एशियाई कला आंदोलन को प्रोत्साहन मिला।

https://www.evidyarthi.in/

भवन निर्माण की नई शैली और नई इमारतें: -ब्रिटिश शासन को भारत में स्थिरता प्राप्त हो गयी तब अंग्रेजों ने अपने शासन व व्यापार-वाणिज्य के लिए आलीशान भवन बनवाए। इन भवनों-इमारतों के निर्माण के लिए उन्होंने मोटे तौर पर तीन स्थापत्य शैलियों का प्रयोग किया । इनमें से एक शैली थी 'ग्रीको-रोमन स्थापत्य शैली । इसमें बड़े-बड़े स्तम्भों के पीछे रेखागणितीय संरचनाओं एवं गुम्बद का निर्माण किया जाता था यह मूलतः रोम देश की भवन निर्माण की शैली थी। एक अन्य शैली 'गॉथिक शैली' थी। ऊंची उठी हुई छतें, नोकदार मेहराबें बारीक साज-सज्जा की शैली का प्रयोग सरकारी इमारतों, शैक्षणिक संस्थाओं एवं गिरजाघरों में होता था ।
उन्नीसवीं सदी के आखिर और बीसवीं सदी की शुरुआत में 'इंडो-सारासेनिक शैली' विकसित हुई। इसमें हिन्दू के लिए 'इंडो' और मुसलमानों के लिए 'सारासेन' शब्द मिश्रित थे।
भारत की मध्यकालीन इमारतों:-गुंबदों, छतरियों, जालियों, मेहराबों से यह शैली प्रभावित थे। इस शैली का प्रयोग कर अंग्रेज साबित करना चाहते थे कि वही यहाँ के वैध व स्वाभाविक शासक हैं। बांग्ला साहित्य (1858-1854) हिन्दी साहित्य (1850-1885) और उर्दू भाषा (हिन्दी-उर्दू की साझा साहित्य संस्कृति) का भी विकास इस दौर में हुआ जिनमें विशेषकर स्वाधीनता सामाजिक सौहार्द्र का संदेश दिया गया ।

https://www.evidyarthi.in/